1. प्रकृति कहती है

प्रकृति हमसे कुछ कहती है। हमें कुछ समझाती है। क्या? आओ पढ़ें–

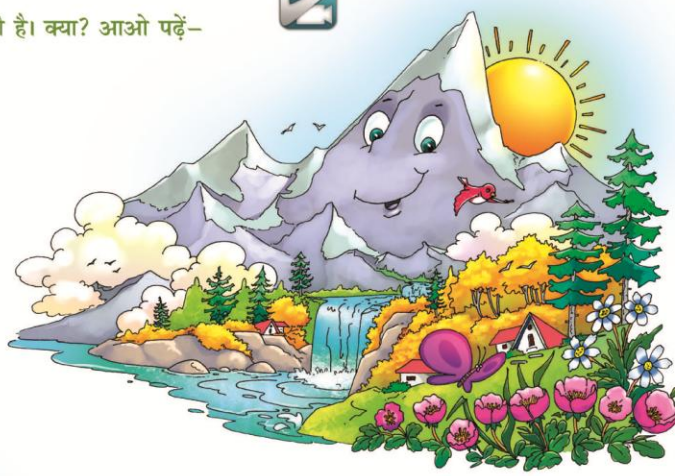

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

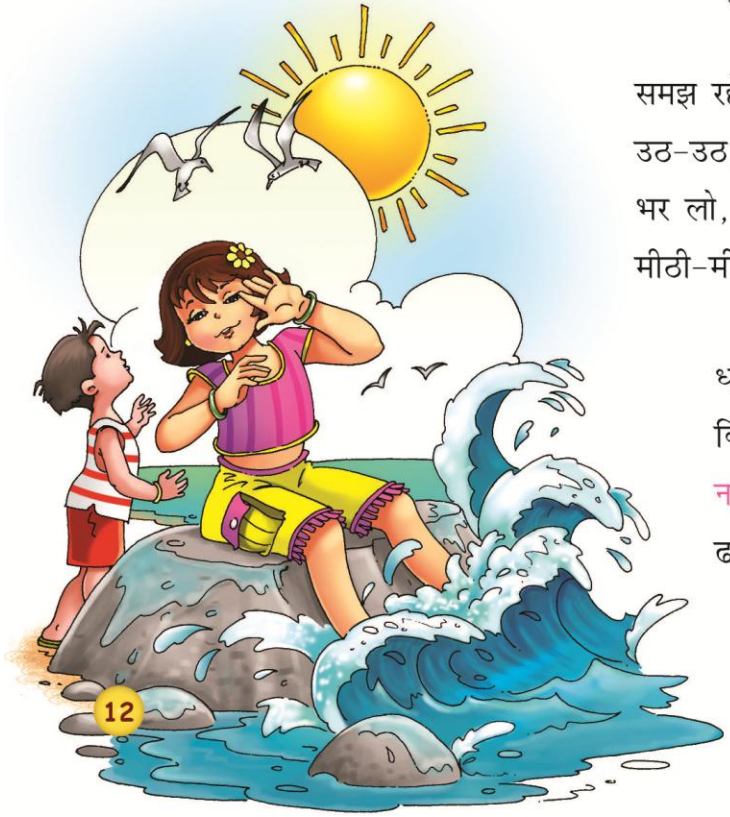

समझ रहे हो क्या कहती हैं,
उठ-उठ, गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

धरती कहती, धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।

–श्री सोहनलाल द्विवेदी